संक्षिप्त मंगल विधान विधि-2026

संकलन- शास्त्री संयम पुजारी, खनियांधाना

मंत्र जो विधान में प्रतिदिन प्रयोग में आते हैं-

अमृत स्नान-

ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लू ब्लू द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा

तिलक लगाकर सर्वांग शुद्धि निम्न मंत्र द्वारा करावें-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा

रक्षा सूत्र मंत्र-

(पृथ्वी छंद)

जिनेन्द्र-गुरु-पूजनं, श्रुत-वचः सदा धारणं,
स्वशील-यम-रक्षणं ददन् सत्तपो-बृंहणम् ।
इति प्रथित-षट्क्रिया-निरतिचारमास्तां तवेत्-
यथ प्रथन-कर्मणे विहित-रक्षिकाबन्धनम् ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ-सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु

ॐ नमोऽर्हते भगवते तीर्थङ्कर-परमेश्वराय एतस्य करपल्लवे रक्षाबन्धनं करोमि समृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा (उक्त तीन मंत्र में से किसी एक का उच्चारण करें)

जलशुद्धि मंत्र-

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिंच्छकेसरिपुण्डरीकमहापुण्डरीकगंगासिंधु-रोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्तासीतासीतोदानारीनरकान्तासुवर्णरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धज-सुवर्णघटप्रक्षालितवरत्नगन्धाक्षतपुष्पोर्जिता-मादकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा

कलश विधि

(शोभा यात्रा के समय श्री जी को विमान जी में विराजमान करने के पूर्व कलश विधि करें, अथवा मंदिर जी में ही विधान हो तो नित्य नियम पूजन प्रारंभ होने से पूर्व मंगल पंचक अथवा मंगलाष्टक पूर्वक यह विधि करें।)

पूर्व तैयारी

जिनमन्दिर अथवा मुख्य कलश विराजमान करता के घर (मंदिर के निकट हो अथवा शोभा यात्रा वहाँ से निकालना हो तो घर पर अन्यथा जिनमन्दिर में ही) पर टेबिल जिस पर विराजमान होने वाले सभी कलश के कतार में रखें जा सकें और एक कलश के साथ 2 से 3 महिलायें आराम से खड़ी हो सकें, सभी कलश टेबिल पर (मुख्य कलश मध्य में), छोटी कटोरी में कलश में डालने वाली सभी सामग्री पूर्व से ही रख देवें (प्रत्येक कलश के पास अलग-अलग, कलश पर बांधने कलावा, स्वस्तिक हेतु चंदन, महिलाओं के बाँय (Left) हाथ में बांधने हेतु कलावा, पुष्प व पीली सरसों, माला, मुकुट।

सबसे पहले मंगल पंचक अथवा मंगलाष्टक का पाठ करें, फिर अमृत स्नान, सर्वांग शुद्धि, और रक्षा सूत्र बंधवाएं, पश्चात निम्न मंत्र द्वारा कलश में सामग्री डलवाएं-

ॐ ह्रीं श्री मंगलकलशे नवरत्नगंधपुष्पाक्षतादीन् निक्षेपयामीति स्वाहा

पश्चात कलश पर नारियल रख देवें, फिर कलावा बंधवाएं व स्वस्तिक चिन्ह बनबाँए (इस समय भजन बोले स्वस्तिक चिन्ह बनाओ मारा साथी..., रक्षा सूत्र बँधाओ मारा साथी...) साथ ही निम्न पद्य बोलें-

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी। मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्॥

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारकम्। प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम्॥

इसके बाद सौभाग्यवती महिलायें कलश को अपने सिर पर रख लेवें (यदि रथ यात्रा निकलना है तो उसमें शामिल हों, और यदि यह विधि विधान स्थल पर ही सम्पन्न हुई हो तो इसके पश्चात वेदी की तीन प्रदक्षिणा करावें।) [यदि विधान स्थल पर ही विधि हो रही हो तो निम्न मंत्र द्वारा सभी कलश माँड़ने पर विराजमान करावें, उसके पूर्व चंदन अथवा पुष्प से स्वस्तिक बनवाए-

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् ________ श्रीवीरनिर्वाणसंवत्सरे ______मासे ______ तिथौ _____ दिने जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यदेशे ______ नाम्नि नगरे _______ जिनमन्दिरे _________कार्यस्य निर्विघ्न समाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्र शुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न-गन्ध-पुष्पाक्षतादि-बीजपूरशोभितं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं सः स्वाहा, मुख्य कलश मध्य में बाकी कलश माँड़ने के कोनों पर विराजमान करावें।]

इसके पश्चात 8 प्रातिहार्य, 8 मंगल द्रव्य विराजमान करावें-

प्रातिहार्य- ॐ ह्रीं अद्य अरहंत-महिमा-बोधक-स्वरूप प्रातिहार्य स्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं सः स्वाहा

मंगल द्रव्य- ॐ ह्रीं अद्य अरहंत-मांगल्य-वर्धक-स्वरूप मंगलद्रव्य स्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं सः स्वाहा

इसके पश्चात निम्न मंत्र द्वारा जिनवाणी स्थापित करें-

ॐ ह्रीं श्री अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापात्मक्षयंकरि श्रुत-ज्वाला सहस्र प्रज्वलिते सरस्वति अस्माकं पापं हन हन दह दह पच पच क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षीरवरधवले अमृत-सम्भवे वं वं हूं हूं स्वाहा

यदि श्री जी की शोभा यात्रा निकलना हो तो...

पूर्व में निम्न बातों का ध्यान रखें

1 श्री जी (एक दिन पूर्व प्रतिमा का मंजन शुद्धि कर लेवें , 1 विमान जी, प्रक्षाल-अभिषेक सामग्री दोनों जगह (जिनमन्दिर व विधान स्थल) (तीन कटनी वाली पाण्डुक शिला अथवा जो समाज में प्रयुक्त होती हो वह, 4 कलश, 2 थाली, 3-4 सूखे कपड़े, चंदन),1 वेदी विधान स्थल पर, 1 माँड़ना, शुद्ध जल, 5 कलश अथवा 3 से अधिक विषम संख्या में, प्रत्येक कलश सामग्री (5 का सिक्का, पीली सरसों, पंच रत्न, सूखी हल्दी की गाँठे, सुपारी), एक थाली में पुष्प व पीली सरसों, चंदन, कलावा (इसके टुकड़े कर लेवें जिससे तीन चक्र कलाई के हो सकें), सूखा गोला अथवा कटोरी अथवा जिनवाणी (रिक्त स्थान पर रखने के लिए), माला, मुकुट, शोभा यात्रा हेतु DJ, भजन लिस्ट, माईक, 8 प्रातिहार्य, 8 मंगल द्रव्य, जिनवाणी।

प्रातः काल प्रक्षाल-अभिषेक के पश्चात श्री जी के समक्ष खड़े होकर आज्ञा लेवें।

हे जिनेंद्र परमात्मा! दिनांक ________ से ______ तक होने जा रहा ____________ विधान के प्रसंग पर आपकी अध्यक्षता हेतु ___________ जिनालय से ___________ स्थल ले जाने की अनुमति चाहते है, इस विधि में पूर्ण यत्नाचार का पालन करते हुए शोभा यात्रा पूर्वक ले जाएंगे; पश्चात पुनः हम आपको इसी स्थान पर ही स्थापित करेंगे, अतः आप हमें आज्ञा प्रदान करें। पश्चात सभी 9 बार णमोकार महामंत्र पढ़े व श्री जी को सर पर लेकर रथयात्रा विमान में विराजित करें।

जिस जगह से प्रतिमा उठाई है उस जगह उल्टी कटोरी, जिनवाणी अथवा सूखा नारियल का गोला रख देवें। (जटा दार गीला नारियल न रखें।) (यह मात्र रिक्त स्थान के प्रतीक के लिए है पूज्यता के लिए नहीं)

शोभा यात्रा विधान स्थल पहुँचने के पश्चात श्री जी को पांडुक शिला पर विराजमान करें पश्चात ध्वजारोहण करें।

ध्वजारोहण विधि पूर्व तैयारी-

ध्वज दंड, 5 रंग का जैन ध्वज, व्यवस्थित उसके अंदर चमकनी इत्यादि समान भर कर बांध देवें, चंदन, पुष्प व पीली सरसों, कलावा, माईक की व्यवस्था।

ध्वजारोहण कर्ता परिवार को **अमृत स्नान, सर्वांग शुद्धि** करवा कर **रक्षा सूत्र** (Page No. 1) बँधवाए, पश्चात **निम्न मन्त्र द्वारा ध्वजदण्ड की शुद्धि करावें -**

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते पवित्र जलेन ध्वजदण्डं शुद्धिं करोमि

निम्न मंत्र द्वारा ध्वजदण्ड में रक्षा सूत्र बंधावें -

ॐ ह्रीं त्रिवर्णसूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा

ध्वजारोहण के समय निम्न श्लोक एवं मंत्रोच्चार करें –

(उपजाति छंद)

तदग्रदेशे ध्वजदण्डमुच्चैर्भास्वद्विमानं गगनाद्विस्थितम् ।
निवेश्यलग्ने शुभोपदेश्यं महत्पताकोच्छ्रयणं विदध्यात्।।

(बसंततिलिका छंद)

रत्नत्रयात्मकतयाऽभिमतेऽत्र दण्डे लोकत्रय प्रकृत केवल बोध रूपम् ।
संकलप्य पूजितमिदं ध्वजमर्थ्य लग्ने स्वारोहयामि सन्मंगल वाद्य घोषे ।।

ॐ णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्यशान्तिर्भवतु स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं जिन शासनपताके सदोच्छिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा (दोनों मंत्रों का उच्चारण करें)

ध्वजारोहण के पश्चात् सभी लोग सावधान होकर निम्न जैन ध्वज गीत बोलें।

मंगलमय अरु मंगलकारी, शासन ध्वज लहराता ।
अनेकान्तमय वस्तु व्यवस्था, का यह बोध कराता ।।
स्याद्वाद शैली से जग का, संशय तिमिर मिटाता।
चहुँगति दुःख नशाता, जन-गण-मन हरषाता, जिन शासन सुखदाता ।।
सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरणमय मुक्ति मार्ग दरशाता।
जय हे.... जय हे... जय हे... जय जय जय हे।।
शासन ध्वज लहराता ।।

पश्चात श्री जी का प्रक्षाल-अभिषेक करें, फिर निम्न मन्त्र द्वारा प्रासुक जल से वेदी की शुद्धि करें-

ॐ ह्रीं श्रीं क्षीं भू: स्वाहा

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: प्रतिष्ठा-मण्डप-वेदी-प्रभृति-स्थानानां शुद्धिं कुर्म:

पश्चात निम्न मंत्र द्वारा श्री जी को वेदी पर सिंहासन पर विराजमान करें-

ॐ नमोऽर्हते केवलिने परम-योगिने अनन्त-विशुद्ध-परिणाम-परिस्फुरित शुक्ल-ध्यानाऽग्नि-निर्दग्ध-कर्मबीजाय प्राप्ताऽनन्त-चतुष्टयाय सौम्याय शान्ताय मंगलाय वरदाय अष्टादश-दोष-रहिताय जिनबिम्बं स्थापयामि

इसके पश्चात माँड़ने पर कलश विधि करें। पहले स्वस्तिक बनवाए फिर निम्न मंत्र द्वारा कलश विराजमान करावें-

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मतेऽस्मिन् ________ श्रीवीरनिर्वाणसंवत्सरे ______मासे ______ तिथौ _____ दिने जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यदेशे ______ नाम्नि नगरे ________ जिनमन्दिरे _________कार्यस्य निर्विघ्न समाप्त्यर्थं मण्डपभूमिशुद्ध्यर्थं पात्र शुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न-गन्ध-पुष्पाक्षतादि-बीजपूरशोभितं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं स: स्वाहा (मुख्य कलश मध्य में बाकी कलश माँड़ने के कोनों पर विराजमान करावें।)

इसके पश्चात 8 प्रातिहार्य, 8 मंगल द्रव्य विराजमान करावें-

प्रातिहार्य- ॐ ह्रीं अद्य अरहंत-महिमा-बोधक-स्वरूप प्रातिहार्य स्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं स: स्वाहा

मंगल द्रव्य- ॐ ह्रीं अद्य अरहंत-मांगल्य-वर्धक-स्वरूप मंगलद्रव्य स्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं हं स: स्वाहा

इसके पश्चात निम्न मंत्र द्वारा जिनवाणी स्थापित करें-

ॐ ह्रीं श्री अर्हन्मुखकमलनिवासिनि पापात्मक्षयंकरि श्रुत-ज्वाला सहस्र प्रज्वलिते सरस्वति अस्माकं पापं हन हन दह दह पच पच क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: क्षीरवरधवले अमृत-सम्भवे वं वं हूं हूं स्वाहा

इसके बाद ठोना माँड़ने पर रख देवें।

तत्पश्चात् विधानाचार्य पुष्प तथा पीली सरसों का क्षेपण कर दिशाओं का बंधन करें। [यदि इन्द्र-प्रतिष्ठा करना हो तो ये पहले न करें इन्द्र प्रतिष्ठा के साथ करें]

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं ह्रां पूर्वदिशात: आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पुष्प व पीली सरसों फेंकें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशात: आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पुष्प व पीली सरसों फेंकें।

ॐ हूं णमो आइरियाणं हूं पश्चिमदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पुष्प व पीली सरसों फेंकें।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशातः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पुष्प व पीली सरसों फेंकें।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिग्भ्यः आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा यह मंत्र पढ़कर दशों दिशाओं में पुष्प व पीली सरसों फेंकें।

यदि कहीं पर इन्द्र इत्यादि बनाए गए हो तो यह विधि करें

अङ्गन्यास एवं शुद्धि

मङ्गलाष्टक के बाद शरीर की रक्षा और तत्तद् दिशाओं में आने वाले विघ्नों की निवृत्ति के लिए नीचे लिखे अनुसार अङ्गन्यास एवं शुद्धि करें। दोनों हाथों के अङ्गुष्ठ से लेकर कनिष्ठिका पर्यन्त पाँचों अङ्गुलियों में क्रम से अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पंच परमेष्ठियों की स्थापना करें।

सर्व प्रथम निम्न मन्त्र बोलकर जल से सर्वाङ्ग शुद्धि करावें
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा
प्रतिष्ठाचार्य द्वारा निम्न मन्त्र बोलते समय, इन्द्र-इंद्राणी , सर्व प्रथम दोनों हाथों के अंगूठों को बराबरी से मिला कर, यन्त्रजी को नमस्कार करें-
ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों को मिला कर नमस्कार करें -
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर दोनों हाथों की मध्यमा अंगुलियों को मिला कर नमस्कार करें -
ॐ हूं णमो आइरियाणं हूं मध्यमाभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों को मिला कर नमस्कार करें -
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर दोनों हाथों की कनिष्ठ अंगुलियों को मिला कर नमस्कार करें -
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर दोनों हाथों की हथेलियों को सामने मिला कर नमस्कार करें -
ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर दोनों हाथों की हथेलियों के पृष्ठ भाग को मिला कर नमस्कार करें -
ॐ ह्रां ह्रीं हूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः
निम्न मन्त्र बोल कर पुष्प व पीली सरसों सब दिशाओं में क्षेपण करें -
ॐ हूं क्ष्रूं फट् किरिटि किरिटि घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्र-खण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमन्त्रान् भिन्दि भिन्दि, क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर सिर झुकाते हुए सिर का स्पर्श करें-

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर अपने मुख का स्पर्श करें-

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर हृदय का स्पर्श करें -

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर नाभि का स्पर्श करें -

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर घुटनों का स्पर्श करें -

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर अपने शरीर का स्पर्श करें -

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर वस्त्र का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर पूजन सामग्री का स्पर्श करें -

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर अपने चारों तरफ का स्थान देखें -

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र बोल कर सीधे हाथ की चुल्लू में जल लेकर अपने सिर के चारों तरफ सींचें -

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्वं जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा

निम्न मन्त्र द्वारा विधानाचार्य चारों तरफ पुष्प क्षेपण करें-

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वविघ्ननिवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

निम्न मन्त्रों को क्रमशः पढ़ कर चारों दिशाओं में पुष्प-क्षेपण करें-

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशः आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिमदिशः आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशः आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष स्वाहा

इसके बाद नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें। साथ ही निम्न मन्त्र को सात बार पढ़ कर विधनाचार्य स्वयं परिचारकों पर पुष्प अथवा पीली सरसों का क्षेपण करें-

ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

पश्चात् निम्न मन्त्र द्वारा यज्ञनायक, इन्द्र-इन्द्राणी आदि पर पुष्प सरसों आदि का क्षेपण करें -

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा णमो अरहंताणं सप्तर्द्धिसमृद्ध-गणधराणां अनाहत- पराक्रमस्ते भवतु भवतु ह्रीं नमः

इन्द्र प्रतिष्ठा

सभी इन्द्र-इन्द्राणियों के हार-मुकुट व आभूषण आदि पर निम्न मन्त्र बोल कर, पुष्प व पीली सरसों का क्षेपण करके उन्हें शुद्ध करें -

ॐ ह्रां णमो अरहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं, ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं! - इति इन्द्र-इन्द्राण्योराभूषणानि पवित्रं कुरु कुरु स्वाहा

जब निम्न श्लोक एवं मन्त्र पढ़ें, तब केसर से तिलक करें –

(उपजाति छंद)

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाहृतचञ्चरीकम् ।
स्थाने नवाङ्के तिलकाय चर्च्य, न केवलं देह-विकार-हेतोः ॥

ॐ ह्रीं चन्दन-तिलकं करोमि

जब निम्न श्लोक एवं मन्त्र पढ़ें, तब षोडश आभरण की संकल्पना करें (सभी इन्द्र-इंद्राणी अपने आभूषणों को स्पर्श करें)-

(शार्दूलविक्रीडित)

धृत्वा शेखर-पट्ट-हार-पदकं ग्रैवेयकालम्बकं;
केयूराङ्गद-मध्यबन्धुरकटि, सूत्रं च मुद्राङ्कितम् ।
चञ्चत्कुण्डल-कर्ण-पूरममलं, पाणिद्वये कङ्कणं;
मञ्जीरं कटकं पदे जिनपतेः, श्रीगन्धमुद्राङ्कित्तम् ॥

ॐ ह्रीं षोडशाभरणानि धारयामि

जब निम्न मन्त्र पढ़ें, तब जल से सर्वांग शुद्धि करें –

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांगशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा

जब निम्न श्लोक पढ़ें, तब गृहस्थी के कार्यों से निवृत्त रहने का नियम करें -

(उपजाति)

विधेर्विधातुर्यजनोत्सवेऽहं, गेहादि-मूर्च्छामपनोदयामि ।
अनन्यचेताः कृतिमादधामि, स्वर्गादिलक्ष्मीमपि हापयामि ॥

ॐ ह्रीं यज्ञोत्सवप्रतिज्ञां करोमि

आगे आचार्य, निम्न मन्त्र 21 बार पढ़ कर इन्द्रों पर पुष्प एवं सरसों का क्षेपण करें –

ॐ वज्राधिपतये आं हां अः ऐं ह्रौं ह्रः क्ष्रू क्षं क्षः इन्द्राय संवौषट्

इसके बाद प्रतिष्ठाचार्य, सभी को आशीष देते हुए निम्न मन्त्र पढ़ें -

ॐ ह्रीं अर्हं अ-सि-आ-उ-सा णमो अरहंताणं, सप्तर्द्धि-समृद्धि-समृद्ध-गणधराणं अनाहत-पराक्रमस्ते भवतु भवतु ह्रीं नमः स्वाहा

इसके बाद विनयपाठ, पूजा पीठिका इत्यादि नित्य नियम पूजन सम्पन्न करावें

पश्चात विधान के मंगलाचरण से प्रारंभ करें। प्रतिदिन विधान की पूजन में सम्पूर्ण महा अर्घ्य के पश्चात गोला चढ़वाए और पूजन सम्पन्न होने के बाद 108 बार तत्संबंधी जाप करावें।

समापन विधि

पूर्व तैयारी

कलश की विधि के समय जो टेबिल की व्यवस्था की थी उसी प्रकार इस समय भी करनी
आवश्यकता 5 पूजन की सामग्री चढ़ाने वाली थाली, 2-2 कलश प्रासुक जल
अंतिम दिन विधान सम्पन्न होने पर महा अर्घ्य के बाद इस विधि को सम्पन्न किया जाए।

कलश विराजमान कर्ता परिवार के पुरुष माँड़ने से कलश उठाकर टेबिल पर रख लेवें, पश्चात उसका कलावा खोल दे, फिर उसमें एक कलश का जल दल देवें, एवं उन कलश से पुण्याहवाचन की क्रिया सम्पन्न करें व अन्य विधान में बैठने वाले जल और चंदन को एक कलश में कर लेवें (दोनों हाथों से नहीं करना है) उसके पश्चात दूसरे कलश का जल उसमें डाल कर अच्छी तरह धोकर उस जल को भी थाली में डाल दें, पश्चात उस जल को गंधोदक सिराने वाली जगह डालें, और उसमें जो सामग्री है उसे सुखाकर माली को दे देवें। [हो सकता हो अधिकतर लोगों ने इस विधि को न देखा हो; परंतु इस प्रकार की विधि का उद्देश्य है की जो कलश घर जाने वाला है वह पूर्ण रूप से सामान्य हो जाए; निर्मंत्रित हो जाए।]

पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं पुण्याहं लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागरप्रभृतयश्चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवा: वा प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ॐ सम्प्रतिकालसंभवा वृषभादिवीरान्ताश्चतुर्विंशति परमजिनेन्द्रा: वा प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मादिचतु विंशतितीर्थंकर परमदेवा: वा प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ॐ त्रिकालवर्ति परमधर्माभ्युदय सीमन्धरप्रभृतय: विदेहक्षेत्रेविहरमाणविंशतितीर्थंकरपरमदेवा: वा प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा: वा प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

ॐ सप्तर्द्धिविशोभिता: कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगम्बरसाधुचरणा: वा प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् (धारा)

पुष्प ले लीजिए

इह वान्यनगरग्रामदेवतामनुजा: सर्वे-गुरुभक्ता: जिनधर्मपरायणा भवन्तु। दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु । सर्वजिनधर्मभक्तानां धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियश: प्रमोदोत्सवा: प्रवर्तन्ताम् । तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, इष्टसम्पत्तिरस्तु, काममाङ्गल्योत्सवा: सन्तु, पापानि शाम्यन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्धताम् कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम्, स्वस्ति भद्रं चास्तु, क्ष्वीं, क्ष्वीं, हं स: स्वाहा। श्री मज्जिनेन्द्रचरणारविन्देष्वानन्दभक्ति: सदास्तु ।

इसके पश्चात शांति पाठ, विसर्जन विधान का समापन करवाना चाहिए।

विसर्जन पाठ के पश्चात विधान में धरण किए गए चिन्ह का विसर्जन (विधान के प्रारंभ में जो कलावा इत्यादि यज्ञोपवीत धारण किए उसको उतार दें) निम्न श्लोक द्वारा -

(वसंततिलिका)

यज्ञोचितं वर विशेष वृतोप्रतष्ठन्।
यष्टा प्रतीन्द्र सहितः स्वय मे पुरावत्।।
एतानि तानि भगवज्जिनयज्ञ दीक्षा।
चिह्नान्यथैलविसृजामि गुरो:पदाग्रे।।

इति यज्ञोपवितादि यज्ञ चिह्नानि गुरु समीपं संन्यस्य नमस्येत् ।

तत्पश्चात् मंगल कलश को लेकर के वेदी की तीन परिक्रमा लगाना चाहिए तथा पुनः श्रीजी को वेदी पर विराजमान करवाकर, अर्घ्य समर्पित करवाकर, ९ बार णमोकार मन्त्र की जाप पूर्वक विधान की विधि का पूर्ण समापन करें।